

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तजवीओ तकईन का तरीका

सारे गुनाह मुआफ़ हों

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो किसी मय्यित को नहलाये, कड़न पहनाये, भुशभू लगाये, जनाजा उठाये, नमाज़ पढे और जो नाकिस भात नजर आये उसे छुपाये वोह गुनाहों से जैसे ही पाक हो जाता है जैसे पैदाईश के दिन था.

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في غسل الميت، ٢/٢٠١، حديث ١٤٦٢)

तजवीओ तकईन के अहकाम से मुतअख्लिक 4 मदनी हूँ

﴿1﴾ मय्यित को नहलाना इज्जे किफ़ाय़ा है भा'ज लोगों ने गुस्ल दे दिया तो सब से साकित हो गया (या'नी सब की तरफ़ से अदा हो गया). (अदारे शरीअत, खिस्सा 4, 1 / 810) ﴿2﴾ मय्यित को कड़न देना इज्जे किफ़ाय़ा है. (अदारे शरीअत, खिस्सा 4, 1 / 817) ﴿3﴾ नमाजे जनाजा इज्जे किफ़ाय़ा है कि अेक ने ली पढ ली तो सब भरियुज़्ज़िम्मा हो गये वरना जिस जिस को भबर पहुंची थी और न पढी गुनहगार हुवा. (अदारे शरीअत, खिस्सा 4, 1 / 825) ﴿4﴾ मय्यित को कड़न करना इज्जे किफ़ाय़ा है और येह ज़ाईज़ नहीं कि मय्यित को जमीन पर रफ़ हें और यारों तरफ़ से दीवारें काँठम कर के बन्द कर हें.

(अदारे शरीअत, खिस्सा 4, 1 / 842)

૩૬ કબ્ર હોને કે બા'દ ઇન 6 મદની ફૂલોં કે મુતાબિક અમલ કીજિયે

﴿1﴾ મૌત વાકેઅ હોતે હી મયિત કી આંખે બન્દ કર દીજિયે. ﴿2﴾ એક ચૌડી પટ્ટી જબડે કે નીચે સે સર પર લે જા કર ગિરહ દે દે તાકિ મુંહ ખુલા ન રહે
 ﴿3﴾ ચેહરા કિબલા રુખ કર દીજિયે ﴿4﴾ મયિત કી ઉંગલિયાં ઓર હાથ પાઉ સીધે કર દીજિયે ﴿5﴾ દોનોં પાઉ કે અંગૂઠે મિલા કર નર્મી સે બાંધ દે
 ﴿6﴾ મયિત કે પેટ પર મુનાસિબ વઝૂન કી કોઈ ચીઝ (મસલન રજાઈ યા કમ્બલ વગેરા હસ્બે ઝરૂરત તહ કર કે) રખ દે તાકિ પેટ ફૂલ ન જાએ.

ગુસ્લ વ કફન કી તય્યારી કે 4 મદની ફૂલ

﴿1﴾ પાની ગર્મ કરને કા ઈન્તિઝામ રખિયે (અભી ગર્મ ન કીજિયે, ગસ્સાલ કે આને પર તરકીબ બનાઈયે) ﴿2﴾ મયિત કે સીને સે ઘુટને તક બદન છુપાને કે લિયે દો રંગીન મોટે કપડે લે લીજિયે ﴿3﴾ કફન (પૌને દો ગઝ ચૌડાઈ હો તો સાત મીટર કપડા, વરના મયિત કી જસામત કે મુતાબિક), અગરબત્તિયાં યા લૂબાન, કાફૂર, રૂઈ ઓર ગુસ્લ કે તખ્તે કા ઈન્તિઝામ કર લીજિયે ﴿4﴾ અગર આપ ને તજહીઝો તક્ફીન કી તરબિય્યત ન લી હો તો સહીહુલ અકીદા સુન્ની તરબિય્યત યાફતા ગસ્સાલ કી તરકીબ બનાઈયે તાકિ સુન્નત કે મુતાબિક ગુસ્લ વ કફન દિયા જા સકે. (એક સૂરત ચેહ ભી હે કિ દા'વતે ઈસ્લામી કી મજલિસે તજહીઝો તક્ફીન સે શાબિતા ફરમા લીજિયે).

गुरले मथित के 7 मराहिल

१॥ ईस्तिन्ना कराना (ईस्तिन्ना करवाने वाला अपने हाथ पर कपडा लपेट ले) २॥ वुजू कराना (या'नी उ बार येहरा और उ बार कोहनियों समेत हाथ धुलाना, अक बार पूरे सर का मस्स कराना, उ बार पाँउ धुलाना, यंकि कुल्ली और नाक में पानी डालना नहीं लिहाजा इँई त्मिगो कर दांतों, मसूढ़ों, छोटों और नथनों पर डेरें) ३॥ दाढी और सर के बाल धोना ४॥ मथित को उल्टी करवट पर लिटा कर सीधी करवट धोना ५॥ मथित को सीधी करवट पर लिटा कर उल्टी करवट धोना ६॥ पीठ से सडारा देते हुवे बिडा कर नर्मा से पेट के नियले डिस्से पर हाथ डेरना (सत्र के मकाम पर न नजर कर सकते हैं न बिगैर कपडे के छू सकते हैं) ७॥ सर से पाँउ तक काफूर का पानी बछाना (काफूर मिले पानी का अक मग काई है)।

कङन काटने के 7 मराहिल

१॥ कङन के लिये तकरीबन पौने दो गज चौडाई का, सात मीटर कपडा लीजिये २॥ अक कपडा मथित के कद से ईतना जियादा काटिये कि लपेटने के बा'द सर और पाँउ की तरफ से बांधा जा सके (ईसे लिफाफा कहते हैं) ३॥ दूसरा कपडा मथित के कद बराबर काटिये (ईसे ईजार या तहबन्द कहते हैं) ४॥ कमीज के लिये कपडे को मथित की गर्दन से घुटनों के नीचे तक नापिये और अब ईसे उबल (दोहरा) कर के काटिये ताकि आगे और पीछे की जनिब लम्बाई (Length) अक छे और चौडाई (Width) दोनों कन्धों के बराबर रहिये, ईस में याक और आस्तीनें नहीं छोती ५॥ मई की कमीज (कङनी) में गला बनाने के लिये दरमियान से, कन्धों की जनिब और औरत

की कमीज के लिये सीने की ज्ञानिभ छतना चीरा (Cut) लगाईये कि कमीज पहनाते वक्त गर्दन से बा आसानी गुजर जाओ (मर्द के लिये कफ़ने सुन्नात में ये छी तीन कपडे हैं जब कि औरत के लिये दू कपडे और हैं, सीनाबन्द और ओढनी) ﴿6﴾ सीनाबन्द के लिये कपडे की लम्बाई सीने से रान तक रणिये ﴿7﴾ ओढनी के लिये कपडा लम्बाई (Length) में छतना काटिये कि आधी पुश्त (या'नी कमर) के नीचे से बिछा कर सर से लाते हुवे येहरा ढांप कर सीने तक आ जाओ और चौड़ाई (Width) अेक कान की लौ (Earlobe) से दूसरे कान की लौ तक हो (येह उमूमन डेढ गज (1.50 Yard) छोती है) छसे कमीज की चौड़ाई से बचने वाले कपडे से बनाया जा सकता है)।

कफ़न पहनाने के 9 मराहिल

﴿1﴾ कफ़न को धूनी देना ﴿2﴾ कफ़न बिछाना (सब से पहले लिफ़ाफ़ा (बडी यादर) फिर छज़ार (छोटी यादर) फिर कमीज बिछाना, औरत के कफ़न में सब से पहले सीनाबन्द फिर लिफ़ाफ़ा फिर छज़ार फिर ओढनी और फिर कमीज) ﴿3﴾ कफ़न बांधने के लिये धज्जियां रणना ﴿4﴾ मथित को कफ़न पर रणना (नर्मी से रणिये, अब ली बे सत्री न डोने पाओ) ﴿5﴾ शहादत की उगली से सीने पर पहला कलिमा, दिल पर या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) लिखना, याद रहे कि येह लिखना शैशनाई से न हो ﴿6﴾ कमीज पहनाना और नाफ़ व सीने के दरमियानी हिस्से अे कफ़न पर मशाईअ के नाम लिखना (औरत को कमीज पहना कर उस के बाल दू हिस्से कर के सीने पर डालना फिर ओढनी पहनाना) ﴿7﴾ आ'जाओ सुजूद (या'नी जिन आ'जा पर सजदा किया जाता है उन) पर काफ़ूर लगाना ﴿8﴾ पेशानी पर शहादत की उगली से بِسْمِ اللّٰهِ

लिफना ﴿9﴾ लिफाफा या'नी बडी यादर पहले उल्टी तरफ से फिर सीधी तरफ से लपेटना (औरत के कफन में बडी यादर के भा'द सीनाबन्द पहले उल्टी तरफ से फिर सीधी तरफ से लपेटना) .

आलिग की नमाजे जनाजा से कबल येह ओ'लान कीजिये

मर्हूम के अजीज व अहबाब तवज्जोह इरमाओं ! मर्हूम ने अगर जिन्दगी में कभी आप की दिल आजारी या एक तलकी की हो, या आप के मकरुल हो, तो इन को रिजाओे ईलाही के लिये मुआफ़ कर दीजिये, ﴿قُلْ لِلَّهِ الْعِزَّةُ﴾ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा. नमाजे जनाजा की नियत और इस का तरीका भी सुन लीजिये. "मैं नियत करता हूँ इस जनाजे की नमाज की, वासिते **अल्लाह** के हुआ इस मय्यित के लिये, पीछे इस ईमाम के." अगर येह अल्फाज याद न रहें तो कोई हरज नहीं, आप के दिल में येह नियत होनी जरूरी है कि मैं इस मय्यित की नमाजे जनाजा पढ़ रहा हूँ. जब ईमाम साहिब "الله أكبر" कहें तो कानों तक हाथ उठाने के भा'द "الله أكبر" कहते हुवे झौरन हस्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढिये. सना में "وَقُلِّبْ عَضُدَكَ" के भा'द "وَجَزِّقْ رِجْلَيْكَ رَجْلًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ" का ईजाफ़ा कीजिये, दूसरी बार ईमाम साहिब "الله أكبر" कहें तो आप बिगैर हाथ उठाओ "الله أكبر" कहिये, फिर नमाज वाला दुरुददे ईब्राहीम पढिये, तीसरी बार ईमाम साहिब "الله أكبر" कहें तो आप बिगैर हाथ उठाओ "الله أكبر" कहिये और आलिग के जनाजे की हुआ पढिये, (अगर नाआलिग या नाआलिगा का

जनाजा हो तो इस की दुआ पढने का अे'लान कीजिये) जब चौथी बार इमाम साहिब "اللّٰهُ اَكْبَرُ" कहें तो आप "اللّٰهُ اَكْبَرُ" कह कर दोनों हाथों को षोल कर लटका दीजिये और इमाम साहिब के साथ काईदे के मुताबिक सलाम फेर दीजिये.

(नमाजे जनाजा का तरीका, स. 19)

तदज़ीन के 17 मराहिल

- ﴿1﴾ कब्रिस्तान में दफ़न के लिये ऐसी जगह लेना जहां पहले कब्र न हो
- ﴿2﴾ कब्र की लम्बाई मथित के कद से कुछ ज़ियादा, चौड़ाई आधे कद और गहराई कम से कम निस्फ़ कद की हो और बेहतर यह कि गहराई भी कद बराबर रभी जाओ
- ﴿3﴾ कब्र में छंटों की दीवार बनी हो तो मथित लाने से पहले कब्र और सलीबों का अन्दरूनी छिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी तरह लीपना
- ﴿4﴾ अन्दरूनी तप्तों पर यासीन शरीफ़, सूरतुल मुल्क और दुइदे ताज पढ कर दम करना
- ﴿5﴾ येहरे के सामने दीवारे किबला में ताक बना कर अह्द नामा, शजरा शरीफ़ वगैरा तबरूकात रभना
- ﴿6﴾ मथित को किबले की जानिब से कब्र में उतारना
- ﴿7﴾ औरत की मथित को उतारने से ले कर तपते लगाने तक किसी कपडे से छुपाओ रभना
- ﴿8﴾ कब्र में उतारते वक्त यह दुआ पढना: **بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلَىٰ مِلَّةِ رَسُولِ اللّٰهِ**
- ﴿9﴾ मथित को सीधी करवट लिटाना या मुंह किबले की तरफ़ करना और कफ़न की बन्दिश षोल देना (मथित लाने से पहले ही कब्र में नर्म मिट्टी या रेत का तक्या सा बना लें और उस पर टेक लगा कर मथित को सीधी करवट लिटाओं यह न हो सके तो येहरा बा

आसान्नी जितना हो सके किब्ला रूप कर दें) ﴿10﴾ बा'दे दफ्न सिरछाने की तरफ़ से तीन बार भिड़ी उलना पहली बार مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ , दूसरी बार مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى और तीसरी बार وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ ﴿11﴾ कब्र उंट के कोखान की तरफ़ ढाल वाली बनाना और गिंयाई अेक बालिशत या कुछ जियादा रचना ﴿12﴾ बा'दे दफ्न कब्र पर पानी छिडकना ﴿13﴾ कब्र पर झूल उलना कि जब तक तर रहेंगे तरभीह करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा ﴿14﴾ दफ्न के बा'द सिरछाने सूरअे बकरह की शुइअ की आयात अे से مُفْلِحُونَ तक और कदमों की तरफ़ आभिरी रुकूअ की आयात اَمِنَ الرَّسُولِ से अत्म सूरह तक पढना ﴿15﴾ तल्कीन करना : कब्र के सिरछाने षडे हो कर तीन मरतबा यूं कहे : या हुलां बिन हुलाना ! (मसलन या झडक बिन आमेना ! अगर मां का नाम मा'लूम न हो तो ईस की जगह उजरते हुवा का नाम ले) फिर येह कहे :

أَذْكُرُ مَا حَرَّجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةً أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
 (مَنْ لَمْ يَلْعَلْ عَلَيْهِ رَأَى بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَبِالْقُرْآنِ آيَاتًا .
 ﴿16﴾ हुआ व ईसाले सवाब करना ﴿17﴾ कब्र के सिरछाने किब्ला इ षडे हो कर अजान देना कि अजान की भरकत से मय्यित को शैतान के शर से पनाह मिलती है, अजान से रहमत नाजिल होती, मय्यित का गम अत्म होता, उस की घबराहट दूर होती, आग का अजाब टलता और अजाबे कब्र से नशत मिलती है नीज मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद आ जाते हैं.

तिलापत से कबल येह ओ'लान कीजिये

اِنَّ الشَّيْطَانَ لِرَبِّهِ الْاِنْسَانِ اَدُوٌّ اَخْتَفٍ
 लगा कर पूब तवज्जोह से सुनिये, फिर अजान दी जाओगी, उस का जवाब दीजिये. फिर दुआ मांगी जाओगी. मर्दूम (मर्दूमा) की कब्र की पहली रात है, येह सप्त आजमाईश की घड़ी होती है, मर्दूद शैतान कब्र में बलकाने की कोशिश करता है, जब मय्यित से सुवाल होता है: **مَنْ رَبُّكَ** या 'नी तेरा रब कौन है? तो शैतान अपनी तरफ़ ईशारा कर के कलता है कि कल दे: "येह मेरा रब है." जैसे मौकअ पर अजान मय्यित के लिये निहायत नफ़अ बफ़श होती है क्यूंकि अजान की बरकत से मय्यित को शैतान के शर से पनाह मिलती है, अजान से रहमत नाजिल होती, मय्यित का गम खत्म होता, उस की धबराहट दूर होती, आग का अजाब टलता और अजाबे कब्र से नजात मिलती है नीज मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाभात याद आ जाते हैं.

मदीना: गुस्ल व कफ़न वगैरा का तरीका सीखने के लिये येह कार्ड ना कार्डी है. तफ़सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब "तजहीजो तकफ़ीन का तरीका" पढ लीजिये और तरबिय्यत के लिये "मजलिसे तजहीजो तकफ़ीन (दा'वते ईस्लामी)" से राबिता इरमाईये.